SHRI MRD ARTS & EELK COMMERCE COLLEGE , CHIKHLI.

M.A.- SEM/ 2 .

PAPER – 7 (पाश्चात्य मीमांसा)

TOPIC : लोंजाइनस उदात्त की अवधारणा

.

DR.RIYAZ TAI ASSISTANT PROF.

पूर्व भूमिका :

- यूनानी काव्य शास्त्र में अरस्तू की प्रसिद्ध रचना ' पेरी पोइतीकेस ' के बाद ' पेरि इप्सुस ' का दूसरा स्थान हैं । ' पेरि इप्सुस ' का अर्थ है - औदात्य , ' ऊंचाई । इस निबंध का एण्ग्रेजी में अनुवाद ' ON THE SUBLIME ' नाम से हुआ है ।

  * कुछ आलोचक विद्वान ' पेरि इप्सुस ' का लेखक जेनोबिया के मंत्री लोंजाइनस को मानते थे , जो अपनी वीरता और विदग्धता के लिए इतिहास में प्रसिद्ध था । विद्वान उसका रचना काल तीसरी शताब्दी स्वीकार करते हैं । इसके विपरीत दूसरों का मत था कि इसका लेखक कोई अज्ञात यूनानी या रोमी था और उसकी रचना पहली शताब्दी में हुई थी ।

- स्कोट्जेम्स ने ‘ पेरि इप्सुस् ‘ का लेखक उसी लोंजाइनस को माना है जिसने बडी निष्ठा के साथ महारानी जेनोबीया की सेवा की ‘ जिसने रेगिस्तान में ‘ पल्म्यूरा ‘ का महान नगर बसाया ।

- विस्तार :
- प्लेटो से ज्यादा प्रभावित था , विशेष रूप में उसकी प्रभावी शैली तथा साहित्य के प्रति भावुक दृष्टिकोण से , परन्तु उसने काव्य के मोहक गुणों तथा उसकी आकर्षण करने की शक्ति की प्रशंसा की , जिनकी प्लेटो ने निंदा की थी । जिस भावों के उत्कर्ष , आह्लाद तथा दिव्य आनंदानु भू ति को प्लेटो काव्य जगत से बहिष्कृत करना चाहता था , उन्हें उसने काव्य के लिए अनिवार्य माना । यह अलंकार शास्त्री था , अत: उसका व्याकरण – शास्त्र , निबंध – रचना – शास्त्र , विश्लेषणात्मक आलोचना शास्त्र का अध्ययन व्यापक था और वह कला के नियमों , शब्दों के शुद्ध प्रयोग और उनके उपयुक्त चयन , छंद और अलंकारों के सम्यक प्रयोग पर भी बहुत बल देता था ।

- * पेरी इप्सुस का प्रतिपाद्य विषय *
- इनकी अमर रचना ‘ पेरि इप्सुस ‘ का दो तिहाई भाग ही प्राप्त हो सका , फिर भी इससे लोंजाइनस के विचारों का सम्यक परिचय हो जाता है । डॉ. नगेन्द्र ने इसके प्रतिपाद्य के संदर्भ में कहा है “ इसमे उदात्त कला की प्रेरक भावनाओं और धारणाओं का विश्लेषण नहीं , बल्कि उदात्त शैली के आधार तत्वों का विवेचन प्रधान है ।”
- * उदात्त का अर्थ एवम स्वरूप *
- उदात्त का शाब्दिक अर्थ है – उच्च , महान , उत्कृष्ट , श्रेष्ठ आदि । किन्तु काव्य में पारिभाषिक रूप में प्रयुक्त किये गये उदात्त का स्वरूप एवम अर्थ के संदर्भ में लोंजाइनस खुद कहते है –

- १. उदात्त अभिव्यक्त की उच्चता का नाम है ।
- २. अभिव्यक्त का यह उदात्त तत्व श्रोता को पूर्णत: अभिभूत करने में है ।
- ३. किसी वस्तु पर विश्वास करें या न करें , यह अपने वश मैं है , किन्तु औदात्य में यह सामर्थ्य है कि वह अपनी दुर्दम्य शक्ति के कारण पाठक या श्रोता को अनायास बहा ले जाता है ।
- ४. औदात्य विचार एकाएक विधुत की भाँति चमक कर संपूर्ण विषय वस्तु को प्रकाशित कर देता है तथा वक्ता के संपूर्ण वाग वैभव को क्षण भर में प्रकट कर देता है ।

- औदात्य एक भाव भी है , विचार भी और शैली भी । औदात्य अत्यंत व्यापक है और उसकी सत्ता रचना के वस्तु पक्ष से लेकर शैली पक्ष तक सर्वत्र विद्यमान रहती है । अर्थात यदि कलाकार के हृदय और व्यक्ति त्व में उदात्त हो तो निश्चय ही उसके विषय , विचार तथा भावों में भी उसका समावेश हो जाता है । यही उदात्तता समन्वित होकर पाठक या श्रोता को चमत्कृत कर देती है ।
- लोंजाइनस कहते है कि –" काव्य का मूल्यांकन पाठक या श्रोता के मानस पर पड़े उसके प्रभाव के आधार पर ही होना चाहिए । यदि किसी काव्य में पाठक या श्रोता को अपने प्रवाह में बहा ले जाने की , उसे इस संसार से ऊपर उठाकर समाधि में पहुंचा देने की शक्ति है , तो. वह काव्य उत्कृष्ट कोटि का है और ऐसा उदात्तता के समावेश से ही किया जा सकता है , क्योंकि उदात्तता काव्य की आत्मा है ।"

- औदात्य के तत्व :
- लोंजाइनस ने उदात्त के पाँच तत्व स्वीकार किये है , जो मानव के अंतरंग एवम bahir
- बहिरंग दोनों ही पक्षों से सम्बन्धीत हैं – 1. भव्य विचार 2. भावों की उत्कृष्टता 3. सुंदर अलंकार योजना 4. उत्कृष्ट भाषा 5. गरिमामय रचना विधान ।
- (१) भव्य विचार : लोंजाइनस का मत हैं कि कोई भी रचना तभी महान हो सकती है , जब उसमें भव्य विचारों का उचित समावेश हो । डॉ. नगेन्द्र का मत है कि –" यह संभव नहीं कि जीवन भर क्षुद्र विचारों से घिरा हुआ व्यक्ति कोई अमर रचना कर सके ।" जिस लेखक का व्यक्तित्व उदात्त होगा , वह स्वयं उदात्त विषयों तथा महान कार्यों से तादात्म्य स्थापित करता हुआ अमर कृतियों का सर्जन कर सकेगा । अतएव काव्य में औदात्य साथ भव्य विचारों का होना आवश्यक है ।

- (२) भावों की उत्कृष्टता : भावों का उत्कृष्ट होना भी उदात्त तत्व की अनिवार्य शर्त है । भावों की उत्कृष्टटा से अभिप्राय एक ऐसे आवेग से है , जिसके परिणाम स्वरूप आत्मा का उदय होता है तथा वह हर्षोल्लास से पूर्ण होकर उच्चा काश में विहार करने लगती है । लोंजाइनस का विचार है कि काव्य में भावों की उत्कृष्टता के लिए उचित प्रसंग में सच्चे भावों से बढ़कर कोई ओर साधन नहीं हो सकता । वह शब्दों से दिव्य आवेग की सृष्टि करता है । वे औदात्य एवम संवेग में कोई अंतर नहीं मानते , किन्तु आवेग या संवेग के उन्हों ने भव्य तथा निम्न दो भेद किये है । वे दया , शोक , भय आदि से संबंधित भावों को निम्न कोटि का तथा आत्मा को उत्कृष्टता प्रदान करने वाले संवेगों को भव्य कहते है । इस प्रकार उन्होंने उत्कृष्ट भावों को ही महत्वपूर्ण काव्य तत्व स्वीकार किया है ।

- सुंदर अलंकार योजना : भारतीय एवम पाश्चात्य दोनों ही काव्यों में अलंकार का प्रयोग लोंजाइनस के पूर्व भी होता था किन्तु उनका आग्रह काव्य में मनोवैज्ञानिक अलंकार प्रयोग से था । अलंकार का सम्बन्ध मनोविज्ञान से बताते हुए वे कहते है –" अलंकार सर्वाधिक प्रभावशाली तब होता है , जब इस बात की ओर ध्यान ही आकर्षित न हो की यहाँ अलंकार है " । " वे स्वीकार करते है कि अलंकार आत्मा नहीं शरीर है । अतएव इसी रूप में उनका प्रयोग भी अत्यंत स्वाभाविक रूप से होना चाहिए । आलंकारिको ने अलंकार का आविष्कार यांत्रिक प्रयोग के लिए नहिं , बल्कि शैली में चमत्कार उत्पन्न करने के लिए ही आविष्कृत किये है । अलंकारों के प्रयोग में स्थान रीती , परिस्थिति एवम अभिप्राय का दयान रखना आवश्यक है ।

- (४) उत्कृष्ट भाषा : काव्य में औदात्य का समावेश तभी संभव है , जब भाषा भी भावों की भाँति ही उत्कृष्ट हो । उत्कृष्ट भाषा का अर्थ है अभी जात पद रचना । काव्य की भाषा सर्वथा भावों के अनुकूल , आडम्बर रहित एवम प्रभावोत्पादक होनी चाहिए जो देखते ही पाठक या श्रोता को अभी भूत कर लें । अतएव लोंजाइनस उदात्त भावों के पोषण हेतु उत्कृष्ट भाषा को पहली शर्त मानते है । उन्होंने गरिमामय तथा गूढ़ भाषा का पूर्ण निषेध किया है । इस विषय में वे कहते है “ गरिमामय भाषा प्रत्येक अवसर के अनुकूल नहीं होती , क्योंकि छोटी मोटी बातों को भारी भरकम संज्ञा देना , किसी छोटे बच्चे को पूरे आकार वाला मुखौटा लगा देने के समान है ।”
- सौंदर्य पूर्ण शब्द विचारों की वास्तविक आभा होते है, जिस प्रकार महान विचार साधारण शब्दों में नहीं बांधे जा सकते , उसी प्रकार उदात्त विचारों और भावों को हल्के शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता ।

- (५). गरिमा मय रचना विधान :
- लोंजाइनस के अनुसार रचना विधान गरिमा मय होना चाहिए । रचना विधान के अंतर्गत शब्दों , विचारों , कार्यों , सुंदरता तथा राग के अनेक रूपों का मिश्रण होता हैं । उनकी दृष्टि में रचना का प्राण तत्व है, सामंजस्य जो उदात्त शैली के लिए अनिवार्य है । इसी को भारतीयों ने बहुत पहले समन्वय कह दिया था । उन्होंने शैली गत रचना विधान की तुलना शरीर रचना से करते हुए दोनों को समान माना है । जिस प्रकार शरीर के विभिन्न अवयवों का अलग – अलग रहने पर कोई महत्व नहीं , सब मिलकर ही एक समग्र शरीर की रचना करते हैं उसी प्रकार उदात्त शैली के सभी तत्व एक कर लिये जाते हैं, तभी उनके कारण रचना गरिमा मय बन पाती है ।

- * उदात्त के विरोधी तत्व :
- लोंजाइनस ने उदात्त के विरोधी तत्वों का भी वर्णन किया है । उन्हें वे दोष की संज्ञा से भी अभिहित करते हैं ।इनमें मुख्य रूप से भाषा की अव्यवस्था , प्रवाह शून्यता, विषय से अधिक लय की प्रमुखता, उक्ति की अधिक संक्षिप्तता, शब्दों का आडम्बर, भावों का आडम्बर, आडंबरपूर्ण शैली, अनुचित विचार, विषय के अनुरूप शब्दावली का अभाव आदि दोषों की ओर संकेत किया हैं । क्योंकि इस प्रकार के दोषों के रहते काव्य में औदात्य तत्व की कल्पना नहीं की जा सकती ।

- *लोंजाइनस की देन *
- लोंजाइनस का काव्य एवम कला से संबंधित यह विवेचन पूर्ण रूप से मौलिक है । लोंजाइनस ने अपने मौलिक विवेचन के माध्यम से प्लेटो और अरस्तू के अपूर्ण काव्य सिधांतों को पूर्णता प्रदान की । उनकी नवीन और मौलिक देन यह थी कि उन्होंने काव्य में भावात्मक उत्तेजना प्रदान करने की क्षमता को अनिवार्य माना था, क्योंकि काव्य की संपूर्ण मोहकता इसी भावोंतेजना पर सर्वाधिक निर्भर करती है । लोंजाइनस ने औदात्य के लिए विषय – वस्तु और भाषा – शैली के समन्वय पर बल दिया । उनहोंने सर्व प्रथम वस्तु निष्ठ और आत्म निष्ठ दोनों दृष्टि कोणों से काव्य का मूल्यांकन करने का संदेश दिया । इस प्रकार लोंजाइनस का ‘ उदात्त – तत्व ‘ पाश्चात्य साहित्य की एक विशेष उपलब्धि है ।

- **THANKS FOR WATCHING.**